4. हजारी प्रसाद द्विवेदी

जन्म— 19 अगस्त, 1907 **मृत्यु— 1979**

जीवन परिचय—हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म श्रावण शुक्ल एकादशी 19 अगस्त 1907 ई. को ओझवलिया गाँव बलिया जिला उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिता श्री अनमोल द्विवेदी और माता श्रीमती ज्योतिष्मति थी। इनकी मृत्यु सन् 1979 में दिल्ली में हुई।

शिक्षा—इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के ही स्कूल में हुई। 1920 में वसरियापुर के मिडिल स्कूल से प्रथम श्रेणी में मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1929 में इन्टरमीडिएट और संस्कृत साहित्य में शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की।

व्यक्तित्व—निबंधों में दार्शनिक तत्वों की प्रधानता, सामाजिक जीवन संबंधी, आलोचनात्मक विषयों भारतीय संस्कृति, इतिहास, ज्योतिष, साहित्य विविध धर्मों और संप्रदायों की विवेचना की।

रचनाएँ—सूर साहित्य, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद, नाथ संप्रदाय, मेघदूत एक पुरानी कहानी, साहित्य सहचर, अशोक के फूल, कल्पलता, कुटज कहानी, बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चंद्रलेखा उपन्यास।

भाषागत विशेषताएँ—इनकी भाषा परिमार्जित खड़ी बोली है। भाव व विषय के अनुसार भाषा का चयन करते थे। भाषा के दो रूप। प्रांजल व्यावहरिक भाषा, संस्कृतनिष्ठ शास्त्रीय उर्दू भाषा और अंग्रजी के शव्दों का समावेश है। गवेषणात्मक, वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक व व्यास शैली का प्रयोग किया।

सम्मान—साहित्य व शिक्षा के क्षेत्र में पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया है।

Scanned with CamScanner

3. हजारीप्रसाद द्विवेदी (2009)

परिचय—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जाने-माने श्रेष्ठ समालोचक, निबन्धकार, उपन्यासकार, निष्ठावान तथा आदर्श अध्यापक थे।

डॉ. शम्भूनाथ सिंह के कथनानुसार, "आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य को बड़ी देन हैं। उन्होंने हिन्दी समीक्षा की एक नई उदार और वैज्ञानिक दृष्टि दी है।"

जीवन परिचय—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 में बलिया जिले के अन्तर्गत दुबे के छपरा नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम अनमोल द्विवेदी और माता का नाम श्रीमती ज्योति कली देवी था।

पिता की प्रेरणा एवं दिशा-निर्देशन के फलस्वरूप संस्कृत एवं ज्योतिष का गहन अध्ययन किया। शान्ति-निकेतन काशी विश्वविद्यालय एवं पंजाब विश्वविद्यालय जैसी विख्यात संस्थाओं में हिन्दी के विभागाध्यक्ष के पद पर प्रतिष्ठित रहे। शान्ति-निकेतन में रवीन्द्रनाथ टैगोर और आचार्य क्षितिज मोहन के सम्पर्क के कारण साहित्य साधना में प्राण-पण से जुट गये।

लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा डी. लिट् की उपाधि से आपको विभूषित किया गया। सन् 1957 में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से सम्मानित किया। 19 मई, सन् 1979 ई. को हिन्दी का यह महान साहित्यकार सदा-सदा के लिए मृत्यु के रथ पर सवार हो गया।

रचनाएँ—आचार्य द्विवेदी जी ने साहित्य की विविध विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। उनकी रचनाएँ निम्न हैं—

(i) आलोचना—'सूर साहित्य', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'कबीर', 'सूरदास और उनका काव्य', 'हमारी साहित्यिक समस्याएँ', 'साहित्य का साथी', 'साहित्य का धर्म', 'नख दर्पण में हिन्दी कविता', 'हिन्दी साहित्य', 'समीक्षा साहित्य'।

(ii) उपन्यास—'चारुचन्द्र लेख', 'अनामदास का पोथा', 'बाणभट्ट की आत्मकथा' तथा 'पुनर्नवा'।

(iii) सम्पादन—सन्देश रासक संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो।

(iv) अनूदित रचनाएँ—प्रबन्ध कोष, प्रबन्ध चिन्तामणि, विश्व परिचय आदि।

भाषा—द्विवेदी जी की भाषा-शैली की अपनी विशेषता है। आपने अपनी रचनाओं में प्रसंगानुकूल उपयुक्त तथा सटीक भाषा का प्रयोग किया है।

भाषा के अन्तर्गत सरल, तद्भव प्रधान तथा उर्दू संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है। वे अपनी बात को स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त करने में सक्षम थे। बोल-चाल की भाषा सरल तथा स्पष्ट है। इसी भाषा को द्विवेदी जी ने अपनी कृतियों में वरीयता प्रदान की है।

Scanned with CamScanner

भाषा में गति तथा प्रवाह विद्यमान है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सुधार आ गया है। संस्कृत के शब्दों के प्रयोग से भाषा जटिल और दुरूह हो गयी है। भाषा की चित्रोपमता तथा अलंकारिता के कारण हृदयस्पर्शी और मनोरम बन गई है।

शैली—(i) गवेषणात्मक शैली—शोध तथा पुरातत्त्व से सम्बन्धित निबन्धों में इस शैली का प्रयोग है।

(ii) आत्मपरक शैली—इस शैली का प्रयोग द्विवेदी जी ने प्रसंग के साथ-साथ स्वयं को समाहित करने के लिए किया है।

(iii) सूत्रात्मक शैली—बौद्धिकता के कारण अनेक स्थान पर सूत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है।

(iv) विचारात्मक शैली—अधिकांश निबन्धों में इस शैली का प्रयोग है।

(v) वर्णनात्मक शैली—द्विवेदी जी की वर्णनात्मक शैली इतनी स्पष्ट, सरस तथा सरल है कि वह वर्णित विशेष स्थलों का मानव पटल के समक्ष चित्र सा उपस्थित कर देती है।

(vi) व्यंग्यात्मक शैली—इस शैली के अन्तर्गत द्विवेदी जी ने कोरे व्यंग्य किये हैं।

(vii) भावात्मक शैली—द्विवेदीजी जहाँ भावावेश में आते हैं वहाँ उनकी इस शैली की सरसता दर्शनीय है।

साहित्य में स्थान—द्विवेदीयुगीन साहित्यकारों में हजारीप्रसाद द्विवेदी का शीर्ष स्थान है। ललित निबन्ध के सूत्रधार एवं प्रणेता हैं। निबन्धकार, उपन्यासकार, आलोचक के रूप में आपका योगदान अविस्मरणीय हैं। आपने अपनी पारस प्रतिभा से साहित्य के जिस क्षेत्र को भी स्पर्श किया उसे कंचन बना दिया।

Scanned with CamScanner

(ब) लेखक परिचय

1. महादेवी वर्मा

जन्म— 26 मार्च, 1907 मृत्यु— 11 सितंबर, 1987

जीवन परिचय—हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों और छायावाद के प्रमुख स्तंभों में से महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप माने जाने वाली महादेवी वर्मा जी का जन्म 26 मार्च 1907 को फर्रुखाबाद, उत्तरप्रदेश के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम बाबू गोविंद प्रसाद वर्मा एवं माता का नाम हेमरानी वर्मा था।

शिक्षा—महादेवी जी की प्रारंभिक शिक्षा इंदौर के मिशन स्कूल में हुई। उन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी, संगीत व चित्रकला की शिक्षा प्राप्त की। 1925 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। विद्यार्थी जीवन से ही वे राष्ट्रीय और सामाजिक जागृति संबंधी कविताएँ लिखती थीं।

व्यक्तित्व—शांत व गंभीर स्वभाव की महादेवी में शैशवावस्था से ही जीव मात्र के प्रति करुणा और दया थी। उनके व्यक्तित्व में पीड़ा, करुणा, वेदना, विद्रोहीपन, अहं-दार्शनिकता और आध्यात्मिकता कूट-कूट कर भरी थी। उनकी रचनाओं में उनके व्यक्तित्व की सूक्ष्म एवं कोमल अनुभूतियों की अभिव्यक्ति स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

रचनाएँ— इन्होंने गद्य, पद्य, चित्रकला एवं बाल साहित्यों की रचना की।

काव्य (पद्य)— नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा काव्य संकलन (यामा, दीपगीत, स्मारिका, परिक्रमा आदि)।

रेखाचित्र — अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ

संस्मरण — पथ के साथी, मेरा परिवार

निबंध संग्रह — शृंखला की कड़ियाँ, विवेचनात्मक गद्य, संकल्पिता, साहित्यकार की आस्था।

Scanned with CamScanner

(ii) [illegible]

(ब) कलापक्ष

(i) भाषा—महादेवी के काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग है। भाषा में संस्कृत शब्दों का आधिक्य है।

भाषा सरस एवं कोमल—संस्कृत शब्दों के प्रयोग होने पर भी भाषा दुरूह न होकर सरस एवं कोमल है। इनके अलावा भाषा प्रवाह, मधुर एवं परिष्कृत है।

(ii) शैली—**वेदना एवं माधुर्य**—काव्य में मीरा सदृश वेदना के स्वर मुखरित हैं। ससीम की असीम के प्रति विरह भावना हृदयस्पर्शी है।

Scanned with CamScanner

(iii) गीतात्मकता—महादेवी जी ने अपनी कविताओं को गीत शैली में रचा है। गीत मधुर, कर्णप्रिय एवं मनोहर हैं।

(iv) अलंकार योजना—उत्प्रेक्षा, मानवीकरण एवं सांगरूपक अलंकारों का विशेष रूप से प्रयोग है।

साहित्य में स्थान—वेदना एवं करुणा का राग अलापने वाली महादेवी वर्मा विश्वस्तरीय महान् कवयित्री हैं। इन्होंने भाषा को माधुर्य एवं लाक्षणिकता प्रदान की। छायावादी एवं रहस्यवाद का अद्‌भुत समन्वय प्रशंसनीय है।

Scanned with CamScanner

2. जैनेन्द्र कुमार

जन्म— 1905 **मृत्यु— 1990**

जीवन परिचय— इनका जन्म सन् 1905 में अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश) में हुआ था। इनकी मृत्यु 1990 में हुई।

शिक्षा— प्रारंभिक शिक्षा हस्तिनापुर के जैन गुरुकुल में हुई। मैट्रिक पंजाब से उत्तीर्ण की। जैनेन्द्र की उच्च शिक्षा काशी विश्वविद्यालय से हुई।

व्यक्तित्व— इनकी रचनाओं में कला, दर्शन, मनोविज्ञान, समाज, राष्ट्र मानवता की झलक है।

रचनाएँ— इनकी प्रमुख रचनाओं में वातायन, एक रात, दो चिड़िया, फाँसी, नीलम देश की राजकन्या, पाजेब कहानी संग्रह हैं। परख, अनाम स्वामी, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्द्धन, मुक्तिबोध— उपन्यास हैं विचार प्रधान निबंध संग्रह में प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वोदय, सोच-विचार, समय और हम।

भाषागत विशेषताएँ— जैनेन्द्र जी की भाषा के दो रूप दिखाई देते हैं— भाषा सरल, सुबोध रूप तथा संस्कृतनिष्ठ भाषा रूप। भाषा में मुहावरों और कहावतों का सजीव प्रयोग किया गया है। इनकी रचना में व्यंग्य, नाटकीयता और रोचकता की प्रधानता है। कथा साहित्य में व्याख्यात्मक और विचारात्मक शैली का प्रयोग हुआ। उपन्यास मनोवैज्ञानिक एवं कहानियाँ चिंतनपरक हैं।

साहित्य में स्थान— साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत-भारती सम्मान, भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

3. फणीश्वर नाथ रेणु

जन्म— 4 मार्च, 1921 **मृत्यु— 11 अप्रैल, 1977**

जीवन परिचय— इनका जन्म 4 मार्च 1921 को औराही हिंगना (जिला पूर्णिया अब अररिया) बिहार में हुआ था। इनकी मृत्यु 11 अप्रैल 1977 को हुई।

शिक्षा— प्रारंभिक शिक्षा फॉरबिसगंज तथा अररिया में पूरी करने के बाद मैट्रिक नेपाल के विराटनगर, आदर्श विद्यालय से की। इंटर मीडिएट काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1942 में की।

Scanned with CamScanner

व्यक्तित्व—हिन्दी साहित्य में आंचलिक उपन्यासकार एवं प्रतिष्ठित कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु ने साहित्य के अलावा राजनैतिक एवं सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी की। इनका जीवन संघर्षों एवं उतार-चढ़ाव से भरा हुआ था।

रचनाएँ—ठुमरी, अगिनखोर, आदिम रात्रि की महक, एक श्रावणी दोपहरी की धूप (कहानी संग्रह) मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, जुलूस कितने चौराहे (उपन्यास) है। नेपाली क्रांति कथा रिपोर्ताज है तथा ऋण जल, धन जल, वनतुलसी की गंध संस्मरण।

भाषागत विशेषताएँ—आंचलिकता की अवधारणा ने कथा-साहित्य में गाँव की भाषा संस्कृति और वहाँ के लोक जीवन को केन्द्र में ला खड़ा किया। लोक गीत, लोकोक्ति, लोक संस्कृति, लोकभाषा एवं लोकनायक की अवधारणा ने भारी-भरकम चीज एवं नायक की जगह अंचल को ही नायक बना डाला। भाषा की सार्थकता बोली के साहचर्य में ही है। हिन्दी के साथ बंगला व नेपाली भाषा पर पकड़ थी।

साहित्य में स्थान—1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई। आपको पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया।

Scanned with CamScanner